International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(I), April - June, 2021, pp.161-165

कोरोना काल में संगीतकला और कलाकार

डॉ. सुनीता श्रीमाली*

सार

भारतीय कलाओं में संगीत कला को सर्वोत्तम माना गया है। आधुनिक परिवेश में सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने का यदि कोई कार्य कर रहा है तो वह कलाकार ही है। आज संगीत कला पूर्णतः ही व्यवसाय हो चुकी है। मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढ़ाने वाली शिक्षा, जिसमें त्याग, बलिदान और अनुशासन के आदर्श निहित हैं, यदि कहीं संरक्षित है तो वह मात्र ***संगीत कला व अन्य कलाएं*** *ही है। किंतु संपूर्ण विश्व में वर्ष 2019 से वैश्विक महामारी कोरोना ने मानव जाति को तन, मन और धन तीनों ही तरह से अत्यंत क्षति पहुंचाई है, जो कलाकार गाना गाकर एक्टिंग करके या अन्य कलाओं के माध्यम से जीवन यापन कर रहे थे वह सब कुछ अचानक बंद हो गया। कोरोना महामारी के कारण देश भर में कला क्षेत्र के लोग रोजी–रोटी के लिए तरस गए हैं ! अतः आवश्यक है कि कला व कलाकारों पर आए संकट को दूर करने का हर स्तर पर और हर संभव प्रयास किया जाए तभी कला व कलाकारों को बचाया जा सकता है ।*

शब्कोशः *संगीत एकला एकलाकारए व्यवसाय।*

प्रस्तावना

संगीतकला

संगीत–कला मनुष्य समाज की कलात्मक उपलब्धियाँ और सांस्कृतिक परम्पराओं का प्रतीक है। जन–जीवन के आत्मिक और सुखानुभूतियों की ललित अभिव्यक्ति का माध्यम है। अपनी इस विलक्षण गुणवत्ता के कारण संगीत स्वतः ही व्यावसायिकता को प्राप्त हो गया। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से स्पष्ट है कि पहले भी संगीत को राजाश्रय प्राप्त था और गीत, वाद्य, नृत्य व नाट्य की शिक्षा देने वाले को शासन की ओर से लाभार्थ पारिश्रमिक भी मिलता था जिसे संगीत का व्यासायिक स्वरूप माना जा सकता है।

व्यवसाय के रूप में संगीत

शास्त्रीय गायकों को एक व्यवसायिक व्यक्तित्व के रूप में समझे जाने की परम्परा का प्रचलन प्राचीनकाल से ही राजा–महाराजाओं के दरबार से ही होता रहा है जिसके प्रमाण हेतु सम्राट अकबर का नाम उल्लेखनीय हे। अकबर के दरबार में तानसेन, बैजू जैसे कलाकारों को उनकी उत्कृष्ट व अद्‌भुत गायकी के लिए सोने, चाँदी, अशर्फियाँ आदि दिया जाना व्यवसायीकरण का ही स्वरूप था। 19 वीं सदी में जन्में पं. विष्णु दिगम्बर पलुष्कर व पं. भातखण्डे के मैराथन प्रयासों से संगीत को विद्यालयी विषयों के रूप में पाठ्यक्रम से सम्मिलित किया जाना व इसके प्रचार–प्रसार के द्वारा संगीत कार्यक्रमों में श्रीवृद्धि होना आदि संगीत के

* एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत (कंठ), राजस्थान संगीत संस्थान, (राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय), जयपुर, राजस्थान।

व्यावसायिक मार्ग को प्रशस्त करता है। वर्तमान में सरकारी अथवा गैर–सरकारी शिक्षण–संस्थानों में माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक व विश्वविद्यालयी स्तर पर संगीत विषय के शिक्षक के रूप में नियुक्त होना, मेधावी छात्रों अथवा शोधछात्रों को स्कॉलरशिप व फेलोशिप का प्रावधान होना, रेडियो और टेलीविजन में कार्यक्रम की प्रस्तुति किया जाना, संगीत–सम्मेलनों में कलाकारों को आमन्त्रित किया जाना व संगीत समीक्षकों की नियुक्ति होने के साथ–साथ शास्त्रीय संगीत का दक्ष कलाकार का देश व विदेश में कार्यक्रम देकर अर्थोपार्जन करना आदि संगीत के व्यवसायिकता का ज्वलंत प्रमाण है। संगीत समाज के विभिन्न वर्ग अपनी जीविकोपार्जन के लिए ये क्रियाएँ करते हैं। जैसे वैदिक काल में सूत, नट, वीणा वादकों आदि अनेक वर्ग थे जो संगीत के द्वारा अपनी आजीविका अर्जित करते थे इसी प्रकार वर्तमान समय में भी शिक्षा, उद्योग, संगीत समारोहों, नाटक, मंच प्रदर्शन आदि के द्वारा जीविका प्राप्त करते हैं। आधुनिक समय में सामान्य जीवन–निर्वाह करने हेतु भी प्रत्येक व्यक्ति को समाज में रहते हुए अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कोई–न–कोई व्यवसाय अवश्य अपनाना पड़ता है। इसलिए संगीत साधना में लीन व्यक्ति भी इन नैतिक कठोरताओं के व्यास से बाहर पग नहीं रख सकता। इसी कारण संगीत जैसी पवित्र, संवेदात्मक व अलौकिक आनन्द प्राप्त करानेवाली ललितकला को भी व्यवसायों की श्रृंखला में सम्मिलित होना पड़ा। संगीत जिस प्रकार अध्यात्मिकता व रंजकता के क्षेत्र में अपना लक्ष्य व उपादेयता रखता है उसी प्रकार व्यवसायिक क्षेत्र भी इसका अपना महत्व है अर्थात् व्यवसाय के रूप में संगीत को अपनाने पर यह हमें अर्थ की प्राप्ति कराता है। एक संगीतकार कला द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से धन अर्जित करके अपना व अपनी कला का पोषण करता है।

संगीत एक साधना है, तपस्या है, अभ्यास है, कला है एवं व्यवसाय है। व्यवसाय के रूप में संगीत एक उत्तम पक्ष है। कुछ लोग संगीत का ज्ञान प्राप्त करके उसे अध्यापन कार्य मे बदल देते हैं, जैसे कोई स्कूल या अकादमी खोलना या किसी विद्यालय या महाविद्यालय में इस विषय का अध्यापक बन जाना जिससे अनेक शिक्षार्थियों को संगीत सीखने का लाभ प्राप्त होता है। ऐसे कलाकार किसी महाविद्यालय, नाटक कम्पनी, रेडियो, दूरदर्शन या चलचित्र से भी जुड़ जाते हैं और फिर अपनी प्रतिभा से बड़े कलाकारों में अपना स्थान ग्रहण करते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, यथा–विभिन्न शुभ अवसरों, विवाह, त्योहार आदि पर संगीत के माध्यम से ही व्यक्ति द्वारा अपनी भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं। प्रत्येक विद्यालय एवं महाविद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आरंभ सरस्वती वंदना के सस्वरपाठ के उपरांत ही प्रारंभ होता है। आधुनिक युग में कला व संस्कृति को शिक्षा–व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गायन, वादन, नृत्य एवं अभिनय संगीत में व्यासायिक संभावनाएं आज की सबसे बड़ी सांगीतिक जरूरत हैं।

कोरोना काल में संगीत कलाकारों की स्थिति

राजस्थान सांस्कृतिकता व कलात्मक गतिविधियों में अपना विशेष स्थान रखता है जीवन में विभिन्न कठिनाईयों का सामना करते हुए यहॉ के निवासियों ने अपने सामाजिक रीति रिवाज उत्सव, त्यौहार व पारम्परिकता को लोकसंगीत के माध्यम से अपनी सहज संवेदना और मौलिक भावाभिव्यक्तियों के कारण सफलतापूर्वक मनाया है। परंतु आज माटी से जुड़े लोक कलाकारों पर कोरोना वायरस महामारी की दोहरी गाज गिरी है जिसकी चपेट में आने से उनकी कला के कद्रदान तो छिने ही, साथ ही अपने फन के दम पर पेट पालने वाले इन कलाकारों के सामने उदर पोषण का संकट भी गहरा गया है । दुनिया भर में लोगों को घरों की चारदीवारी में कैद करने वाली कोरोना वायरस महामारी ने जीवन से गीत, संगीत, खेलकूद सभी कुछ मानों छीन लिया है।कलाकार समाज और संस्कृति के वाहक और महत्वपूर्ण अंग होते हैं। यही कलाकार सभ्यता और संस्कृति को समृद्ध व समाज को जागरूक करने का कार्य करते हैं। परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सरकार ने **कोरोना संकट**(Corona Crisis) से उबरने के लिए सभी तरह के उत्सवों एवं मेलों में सोशल डिस्टेंसिंग और मिनिमम सोशल गेदरिंग को ध्यान में रखते हुए इन पर पाबंदी लगाई। जैसे–जैसे लॉकडाउन बढ़ता गया, आगे के कार्यक्रम निरस्त होते गए।

प्राचीन काल में राज्य में युद्ध छिड़ जाता था तो कवि वीर रस के गीत लिखते थे। आज कोरोना के खिलाफ युद्ध में कलाकार वैसी ही भूमिका निभा रहे हैं। लडाई में जोश भरने के लिये कलाकारों ने रचनात्मक

अभियान चलाया है। जिस तरह संगीत में सामंजस्य अनुशासन की जरूरत होती है उसी धैर्य व सामंजस्य से ये कलाकार अत्यन्त कठिन परिस्थिति में भी अपने कला को बचाने में लगे है किन्तु इनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है कि दुनिया भर के लोगों को अपनी कलाओं और हुनर से जागरूक करने वाले लोग अपने अधिकारों के लिए आगे नहीं आये। परिणामस्वरूप आज उनके पास काम नहीं है। इन्हीं से इन कलाकारों का घर–परिवार चलता था। लोक कलाकारों के परिवारों पर इसका सीधा असर देखने को मिल रहा है। इन कलाकारों की रोजी–रोटी व आजीविका साधन ही ये त्योहार, जागरण, शादियां या भागवत होते थे। अब लॉकडाउन के चलते इनके घरों का चूल्हा जलना मुश्किल हो गया है। गायन वादन नृत्य व अन्य कलाओं के कलाकार, म्यूजिशियन, साउंड सिस्टम ऑपरेटर और टैंट हाउस वाले अपने–अपने घर में कैद हैं और इन कलाकारों की आजीविका पर कोरोना का ग्रहण लग गया है।

ऐसे में मानवीय संवेदनाओं के संवाहक की भूमिका निभा रहे संगीत कलाकारों की व्यथा और भी गहरी है क्योंकि इनमें से अधिकतर ज्यादा पढेलिखे नहीं होने के कारण सोशल मीडिया की शरण भी नहीं ले सकते। पद्मश्री से नवाजे गए झारखंड के लोकगायक मधु मंसूरी को लगातार लोक कलाकार अपनी समस्याओं को लेकर फोन कर रहे हैं लेकिन उन्हें समझ में नहीं आ रहा कि किस तरह से उनकी मदद करें। उन्होंने फोन पर कहा ''आप बताओ कहां चिट्ठी लिखनी होगी या बोलना होगा इनकी मदद के लिये। हम लिख देंगे। यहां के संस्कृतिकर्मी लोक संगीत से जुड़े लोग हमें बड़ा सम्मान देते हैं उन्होंने कहा कि उनके साथ 20–22 लोगों का ग्रुप है जिनमें पांच वादक और कोरस गायक हैं जो ज्यादातर गरीब और भूमिहीन हैं। उन्होंने कहा कि ये लोक कलाकार कार्यक्रमों से ही पेट पालते हैं कार्यक्रम करने वाले मंसूरी ने कहा,''सरकार को लोक कलाकारों के भविष्य के लिये कोई कदम उठाना चाहिये। यहां के भोले भाले आदिवासी कलाकार तो अपनी बात रख नहीं सकते।'' वहीं लोक शैली में कबीर के भजन गाने वाले मालवा अंचल के नामी कलाकार पद्मश्री प्रहलाद टिपाणिया का कहना है कि बड़े शहरों में तो लॉकडाउन के दौर में ऑनलाइन कन्सर्ट वगैरह हो रहे हैं लेकिन दूर दराज गांवों में रहने वाले ये कलाकार उसमें कैसे भाग ले सकते हैं ? उन्होंने कहा, ''निश्चित तौर पर इस समय परेशानी तो है लेकिन क्या करेंगे? हम तो छोटे से गांव में रहते हैं और इंटरनेट वगैरह के बारे में उतना जानते नहीं है। लाइव कन्सर्ट वगैरह चल रहा है ऑनलाइन और पिछले कुछ दिन से मैं भी जुड़ रहा हूँ। लेकिन हर कलाकार के लिये तो यह संभव नहीं है।'' टिपाणिया के इस दौरान फीजी और मॉरीशस में कार्यक्रम थे जो रद्द हो गए। जो कलाकार सिर्फ कला पर निर्भर करते हैं ,उनके सामने उदर पोषण का संकट है। सिर पर रंग बिरंगा फेटा, धोती और हाथ में ढोल लेकर महाराष्ट्र की लोककला गीत नृत्य के रूप में पेश करने वाले सांगली के 'धनगरी गज आर्टिस्ट समूह' के कलाकार हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। कई अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग ले चुके इस दल के प्रमुख अनिल कोलीकर ने कहा ,''हम एक महीने में पांच से दस स्थानीय कार्यक्रम और बाहर दो या तीन कार्यक्रम करते है। अप्रैल में सीजन होता है क्योंकि यह समय शादी और मेलों का है। इनके दल में 50 लोग लेकिन अभी हाथ में बिल्कुल पैसा नहीं है। लावणी, तमाशा, भारोड़ जैसे दूसरे लोक कलाकारों से भी फोन आ रहे हैं जो समझते हैं कि ष्हम अंतरराष्ट्रीय कलाकार हैं तो उनकी बात आगे रख सकते हैं। हमारे ग्रुप में कई बुजुर्ग कलाकार हैं जो बैठकर बजाते हैं। उन्होंने कहा,'' अपनी बात रखने के लिये ये सोशल मीडिया भी इस्तेमाल नहीं कर सकते क्योंकि ज्यादातर अनपढ़ और गरीब है दिनांक 1 जून 2020 को स्पिक मैर्क के सात दिवसीय ऑनलाइन अनुभव समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने विडियो संदेश में कोरोनाकाल में प्राचीनकला संगीत के डिजिटल संग तालमेल को समय की मांग बताते हुए कहा कि इस समय संगीत देश की सामूहिक उर्जा का नया स्त्रोत बन गया है जो कोरोना से लड़ रहे लोगों का न केवल मनोबल बढ़ाएगा बल्कि उनमें नई आशा और आत्मविश्वास भी पैदा करेगा। बीमारी के कारण दुनिया में तनाव डर दुविधा है, उस पर कला और संगीत मरहम लगा सकते है।

सदियों से भारतीय ज्ञान की शाखाओं में संगीत कला की धरोहर मौखिक परम्पराओं की अनुपमथाती से अग्रसरित एवं पल्लवित हुई हैं। संगीत कला श्रुति परम्परा के माध्यम से साक्षात गुरूओं की उपस्थिति में ही शिष्यों में संचारित होती है एवं उसका प्राणतत्व है। दूसरी तरफ मंच प्रदर्शन में सुधी श्रोताओं के कलागत भावों

का आदान प्रदान ही कलाकार ही कला प्रस्तुति उत्कर्ष लाता है। परन्तु वर्तमान आपात परिस्थिति में यह दोनों क्रियाएँ पूर्णतः समाप्त हो गई है, जो संगीत कला के प्रदर्शन, शिक्षण, कला साधना को तथा इनसे जुड़े कलाकारों को गहराई से प्रभावित कर रहा है।

विचारणीय पहलू

कोरोना महामारी से कलाकार बेकारी, बेरोजगारी, निराशा, हताशा, अवसाद और घुटन इंसानी जिंदगी का हिस्सा बनते जा रहे हैं। कोरोना महामारी से पैदा हुए हालात लोगों पर भारी पड़ने लगे हैं। मजबूर घरों में बैठे संगीत कलाकार लोगों को उक्त मानसिक समस्याओं से उबारने के लिए गुरु नगरी में लघु फिल्मों के निर्माण का दौर शुरू हो चुका है। इसका मकसद पैसा कमाना नहीं बल्कि पुराने कलाकारों का चमकाना, नयों को मौका देना और उनमें जिंदगी के प्रति ऊर्जावान और सकारात्मक सोच भरना है। उक्त पहल के सूत्रधार नाटककार, निर्देशक तथा फिल्मी कलाकार गुरिंदर मकना बताते हैं कि कोरोना महामारी के चलते लगे लॉक डाउन में जिंदगी ही लॉक डाउन हो गई है। न तो लोगों के पास कामकाज है न ही कोई अन्य संसाधन नतीजतन संगीत कलाकार लोग घरों में कैद होकर रह गए हैं। यह हालात लोगों को कुंठा की खाईं में लेकर जा रहे हैं। लॉक डाउन में भी लोग पहले की तरह से खुशहाल रहें उसी के लिए उन लोगों ने लघु फिल्मों के निर्माण का सिलसिला शुरू किया है। कलाकारों, लेखकों और गीत और संगीतकारों को कोरोना काल में मौका देने के लिए ऑन लाइन लाइव परफार्मेंस वर्कशाप भी हो रहा है। सरकार को विचार करना चाहिये कि लोक कलाकारों के लिये कोई प्रबंध किया जाये क्योंकि वे कहां जाकर किससे मांगेंगे।'' कोरोना के प्रभाव ने हमें अकस्मात् ही 'डिजिटल' की राह पर धकेल दिया है और जिसका वर्तमान में कोई और विकल्प भी दिखाई नहीं देता ऐसे में 'भारतीय शास्त्रीय संगीत' जैसे आत्मीय विषय, जिसमें आमतौर पर अच्छे गानेध्बजाने को तबीयत से गानेध्बजाने की संज्ञा दी जाती है, जिसका वास्तविक अर्थ आत्मीय जुड़ाव से होता है, उस तबीयत पर 'डिजिटल प्लेटफार्म' क्या प्रभाव छोड़ रहा है, इस पर भी विचार किया जाना आवश्यक है.

निष्कर्ष

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और उसे अपनाना मानवीय प्रवृत्ति इसीलिए कोरोना काल में हम कला को ऐसे नहीं देख सकते भारत में कला मात्र मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि मनोपरिवर्तन का भी माध्यम है। ऐसे में जो प्रयोग कोरोना काल में इसके साथ किए जा रहे हैं वह किस दिशा में स्थापित होंगे, इसके बारे में सोचने की आवश्यकता है.मानवीय संवेदनाओं के संवाहक की भूमिका निभा रहे संगीतकलाकारों की व्यथा गहरी है क्योंकि इनमें से अधिकतर ज्यादा पढ़े लिखे नहीं होने के कारण सोशल मीडिया की शरण भी नहीं ले सकते। ऐसे में खाली बैठे कलाकार आर्थिक मुश्किलों का सामना कर रहे हैं, सरकार को विचार करना चाहिए कि कलाकारों के लिए कोई प्रबंध किया जाए क्योंकि वे कहां जाकर किससे मांगेंगे। सहायता के लिए भारत सरकार एवं सभी राज्य सरकारों को सोचना चाहिए और जल्द से जल्द कोई मददगार योजना लानी चाहिए, हम सभी को ये दुआ करनी चाहिए कि जल्द ही कोरोना के कहर**(भ्पस व ब्वतवद)**का बादल छंटे तो उनकी जिंदगी में कलाओं के रंग फिर से सजें, अन्यथा प्रवासी मजदूरों की तरह संगीत कलाकारों की ये समस्या बेरोजगारी का भयावह रूप ले सकती है। ऐसे समय में समाज को दिशा देने वाले और अच्छी चीजों को जन–जन तक पहुँचाने वाले कहाँ से आएंगे।

सरकारों ने जिस तरह से दूसरे राज्यों से घर लौटे बेरोजगारों को रोजगार देने की मुहिम छेड़ी है, उसी तर्ज पर कलाकारों के लिए विशेष नीति (Special Policy For Music And Artists) बनाकर उन्हें कुछ आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाकर उनके तनाव को कम करने की जरूरत है ताकि वो समाज में आए तनाव को कम कर सकें। कोरोना महामारी के कारण दुनिया में जो तनाव डर दुविधा है, उसपर कला और संगीत ही मरहम लगा सकते हैं। अतः आवश्यक है कि कला व कलाकारों पर आए संकट को दूर करने का हर स्तर पर और हर संभव प्रयास किया जाए तभी कला व कलाकारों को बचाया जा सकता है, जहां कला व कलाकार का सम्मान होता है, वहीं विकास के साथ–साथ परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान तथा संरक्षण भी होता है।

यदि हम कला व कलाकार का सम्मान करेंगे, संगीत, कला एवं कलाकारों को बचाने का प्रयास करेंगे और उन्हें हर संभव आर्थिक सहायता उनके परिवार, रोजी–रोटी व्यवसाय को बनाए रखने का प्रयास करेंगे तभी हम अपनी धरोहर को सहेज पाएंगे।

संदर्भ

1. टाक, तेज सिंह नेट संगीत,पृ. 01
2. मनकान, डॉ. गुरमीत सिंह, उत्तर भारतीय संगीत, पृष्ठ 5 व 6
3. कुलमर्णी, डॉ. वसुधा, भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, पृ. 11
4. शर्मा, डॉ. सत्यवती, संगीत का समाजशास्त्र, पृ. 91
5. शर्मा, प्रो. स्वतंत्र, सौन्दर्य, रस एवं संगीत, पृ. 320
6. वही पृ. 322
7. द प्रिन्ट, समाचार पत्र, दिनांक, 14 जून, 2020
8. जागरण, हिन्दी न्यूज दिल्ली, 1 जून, 2020
9. भारती कुसुम जागरण हिन्दी न्यूज, लखनऊ, 29 अगस्त, 2020
10. आज तक, न्यूज हिन्दी, 22 अप्रेल, 2020
11. हिन्दुस्तान न्यूज पेपर, झारखंड 02 मई, 2020
12. उपाध्याय अमलेन्दूं, हस्तक्षेप डाट कॉम, 10 जून, 2020
13. शर्मा माधव, दवायंद 02 मई, 2020
14. दैनिक भास्कर हिन्दी, न्यूज 27 जून, 2020
15. व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर

❖◆❖